

उपसंहार

वर्तमान युग सुचना प्रौद्योगिकी का युग है जिसने समूची दुनिया को एक स्थान पर समेट लिया है। जहाँ उत्तर आधुनिक विमर्श और मीडिया इसके आधार स्तम्भ बनकर उभरे हैं। वहीं हिंदी भाषा और साहित्य में हाल के दशकों में कई आधुनिक विमर्शों ने अपना आरंभिक स्थान थोड़ा प्रभावशाली बनाया है। जिनमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, किसान विमर्श, और दक्षिणी भारत में पारिस्थितिकी विमर्श प्रमुख रूप से उभरे हैं। ये विमर्श साहित्य पढ़ने और समझने की नई सोच, दिशा और दृष्टि देते हैं। विषय क्षेत्र से यह विमर्श समानता, स्वतंत्रता अभिव्यक्ति की आजादी, और अपने अधिकारों के प्रति सचेत करते हैं। व्यक्ति अथवा समुदाय की अस्मिता और अधिकारों के संघर्ष को स्पष्ट करते हैं। परिणाम यह हुआ कि हाशिए में गिने जाने लोगों ने केंद्र में अपनी उपस्थिति दी और प्राचीन कुप्रथाओं और रूढ़ मानसिकता से उभर कर स्वयं और समाज को नई दिशा और दृष्टि दी। प्रेमचंदीय विचरों में कहा जा सकता है कि पुरानी बीती गुजरी बातें आनुभाविक चोटे देती हुई कल्पनामय होकर साहित्य सृजन में परिणत हुई हैं।

‘धूणी तपे तीर’ में अभिव्यक्त आदिवासी आन्दोलन एक पूर्वनियोजित, संगठनमयी योजना का प्रतिफल था। जिसे इतिहास के पृष्ठों में तोड़ मरोड़कर छिपाने का प्रयास किया गया। राजस्थान के महान इतिहास लेखक पं. गौरीशंकर हिराचंद ओझा ने यह कह कर पल्ला झाड़ दिया कि मानगढ़ पर इक्कठे होकर उत्पात मचाते भीलों की गोलियां चलाकर शांत करना पड़ा। जिसमें कुछ लोग मरे गये। जबकि मरने वालों की संख्या करीबन एक हजार पांच सौ तीन हजार के मध्य थी। जबकि इतिहास इन तथ्यों को ‘कुछ’की संख्या तक ही सीमित कर देता है। इस से बड़ी और विडम्बना क्या हो सकती है ? इस घटना से सम्बन्धित विभिन्न साक्ष्य अभिलेखीय और लोकपक्षीय प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में उपलब्ध रहे। लेकिन आज

तक लेखकों और साहित्यकारों ने अपनी विमुखता बरती। हरिराम मीणा ने इस विद्रोह से सम्बन्धित विभिन्न पर्याप्त साक्ष्य एकत्र किये। प्रस्तुति हेतु मजबूत जमीन तैयार की। जहाँ अपनी खोजी और संतुलित दृष्टि का परिचय देते हुए इन तथ्यों का बड़े जतन के साथ संयोजन किया। जहाँ आदिवासी समाज की सभ्यता और संस्कृति के साथ-साथ उनके धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि स्तरों को संश्लेषण-विश्लेषण कर एक नई और मुकम्मल पहचान दी है।

लेखक ने ऐतिहासिक तथ्यों के उजागर के साथ ही इन्हें सृजनात्मक आख्यान में ढाला है। जिसमें कल्पना का योग है। जिससे रचना में सृजनशील ऐतिहासिकता में रोचकता आई है। एक नया दृष्टीकोण हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। आदिवासियों के भोलेपन को राजा की गैल के माध्यम से उनके प्रेमी जीवन को कमली और नंदू के प्रेम के माध्यम से राजशाही जीवन को अंग्रेगी सरकार और मेवाड़ दरबार के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से और सेना से जुड़े कार्यों को मेवाड़ भील कोर्प्स को रायफल देने के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है।

विस्तृत फलक पर फैले चारित्रिक गठन और विस्तार भी बड़ा संयोजित और लालित्य युक्त है। उपन्यास के नायक गोविन्द गुरु के चरित्र को लेखक ने कल्पना का सहारे उत्कृष्टता प्रदान की। उनके बचपन के भ्रमणशील व्यक्तित्व को विस्तार दिया। जो आगे जाकर आदिवासी जीवन का पर्या-सा बना गया। बालक गोविन्द अपनी सच्ची लगन और मेहनत को इस भांति क्रमशः विकसित करता है कि गोविन्द से गोविन्द गुरु बन जाते हैं। कुरिया और पूंजाधीरा जैसे पत्रों के सहारे कल्पना लोक में विचरण करता सामाजिक सुधार का बिगुल बजता है। नशामुक्ति और शाररिक स्वच्छता सम्बन्धी कार्यक्रम उनके सामाजिक सुधार को गति देते हैं। विधवा विवाह को स्वीकार करते उनके क्रांतिकारी जीवन में कुछ पड़ाव है। जिनसे उनके व्यक्तित्व में रंगत आ गई।

मेलों का आयोजन, वहां के संगीन कार्यक्रम, परस्पर प्रेमाकर्षण, पंचायती निर्णय और कभी उसके विरुद्ध प्रेमी युगल का निर्णय आदि उनकी सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट करते हैं। चौपालों पर बैठकर चिलम पीते लोक कथों का गायन-वाचन 'वसुधैव कुटुम्बकुम' को चरितार्थ करते हैं। अतः कह जा सकता है कि विभिन्न प्रकार के लोक गीतों, लोक नृत्यों, लोक गाथाओं, मिथकीय कथाओं के में विश्वास करते आदिवासी जीवन के सांस्कृतिक पक्ष को संबल मिला है। लेखकीय दृष्टि जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास को गति देती है और लक्ष्य भेदी हो जाती है।

हिंदी की आंचलिक रचनाओं की भांति यहाँ भौगोलिक और प्रकृतिपरक दृश्य विधानों का अभियोजन हुआ है। आदिवासी समाज की परम्परागत निवास-पद्धति के चित्रण को भी परिलक्षित करते हैं। इन बेजोड़ गुम्फित नमूनों का हृदयी स्पर्शी चित्रांकन बहुत कम रचना में संयोजित हो पाता है। जो इस उपन्यास की अपनी अनूठी विशेषता है। वर्तमान राजस्थान के दक्षिणांचल और अन्य राज्यों से सटे निकटवर्ती स्थानों की प्राकृतिक और भौगोलिक दृश्य अपनी समग्रता में मौजूद है। यहाँ के पहाड़ी-घाटियों, नदी-नालों आदि का चित्रण लेखक की सूक्ष्म पर्यवेक्षण-विश्लेषण दृष्टि का परिचय देते हैं। प्रकृति के साथ मानव जीवन का अभिन्न संबंध है। इसलिये नदी-नाले, धरती-आकाश, पहाड़-वृक्ष, चाँद-सूरज की धुप-छाहीं में रमते बादल-वर्षा मानवीय हंसी-खुशी और सुख-दुःख के साथ अविच्छिन्न रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। जहाँ प्रकृति आदिवासी जीवन के साथ कभी मुरझाती तो कभी निखरती दिखाई देती है।

'धूणी तपे तीर' और 'मगरी मानगढ़ : गोंविद गिरी का तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हरी राम मीणा ने गोंविद गुरु की छवि एक संगठनकर्ता के साथ-साथ एक लोक चिंतक के रूप में भी उपस्थित की है। जो राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानव समज से जुड़े अन्य पक्षों, जिनमें प्राकृतिक मुद्दे भी सम्मिलित हैं, से प्रभावित होते हैं।

और उन्हें प्रभावित करते हैं और उनके उन्नयन हेतु गिरफ्तार होने तक प्रयास करते रहते हैं। राजेंद्र मोहन भटनागर ने लोक चिंतक के साथ-साथ बदली और गन्नी के साथ उनका प्रेम सम्बन्ध जोड़ कर उनका लोकरंजक रूप भी प्रस्तुत किया है। जो की उन के व्यक्तित्व के साथ असहज महसूस होता है। निष्कर्षतः कह सकते हैं की 'धूणी तपे तीर' उपन्यास में आदिवासी आन्दोलन की अभिव्यक्ति हुई है।